महावीर मन्दिर, पटना

रामनवमी-पर्व-निर्णय

महावीर मन्दिर के पं. श्री जटेश झा, पं. मायाशंकर झा, ज्यौतिषाचार्य, पं. भवनाथ झा आदि विद्वानों ने निर्णय लिया गया कि अगस्त्य संहिता तथा वाल्मीकीय रामायण के अनुसार भगवान् श्रीराम का जन्म चैत्र शुक्ल नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र में कर्क लग्न में हुआ था। अतः यह पर्व मध्याह्न-व्यापिनी है। दि0 31 मार्च को मध्याह्न में कर्क लग्न में नवमी तिथि, एवं पुनर्वसु नक्षत्र का योग उपलब्ध है; जबकि दूसरे दिन दि0 1 अप्रैल को नवमी तिथि प्रातःकाल में ही समाप्त हो जाती है।

रामनवमी व्रत के सम्बन्ध में निर्णय लेनेवाले प्राचीन शास्त्रकारों में माधवाचार्य (14वीं शती) , म0 म0 रुद्रधर(15वीं शती), म0 म0 महेश ठाकुर(16वीं शती), कमलाकर भट्ट (17वीं शती) रत्नपाणि (19वीं शती) आदि ने अगस्त्य-संहिता का वचन उद्धृत करते हुए कहा है कि –

चैत्रशुक्ले तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि।
सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत्।।

अर्थात् चैत्र मास के शुक्लपक्ष की नवमी तिथि यदि पुनर्वसु नक्षत्र से युक्त हो और मध्याह्न काल का योग हो तो यह वहुत पुण्य देने वाली होती है।

इस प्रकार यह पर्व मध्याह्न व्यापिनी है। दि0 31 मार्च को ही मध्याह्न में कर्क लग्न में नवमी तिथि, एवं पुनर्वसु नक्षत्र का योग उपलब्ध है; जबकि दूसरे दिन दि0 1 अप्रैल को नवमी तिथि मध्याह्न-काल आरम्भ होने से पूर्व ही समाप्त हो जाती है, मध्याह्न काल में दशमी तिथि हो जाती है। इसे समझने के लिए मध्याह्न-काल के सम्बन्ध में गणना नीचे दी जा रही है।

शास्त्र के अनुसार सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त दिन कहलाता है। यह जितने घंटे मिनट का होगा उसे दिनमान कहेंगे। सूर्यास्त के समय का दूना कर लेने पर भी घंटा-मिनट में दिनमान निकल आता है। इस दिनमान का पन्द्रहवाँ भाग एक मुहूर्त कहलाता है। काल की दृष्टि से दिन को पाँच भागों में विभक्त किया गया है – 1. प्रातःकाल 2. संगव-काल 3. मध्याह्न-काल 4. अपराह्ण-काल तथा 5. सायाह्न-काल।

प्रातःकालो मुहूर्तस्त्रीन् संगवस्तावदेव हि।
मध्याह्नस्त्रिमुहूर्तः स्यादपराह्णस्ततः परम्।।
सायाह्नस्त्रिमुहूर्तं स्याद् यावदस्तं गतो रविः।

अर्थात् 3 मुहूर्त प्रातः, 3 मुहूर्त संगव, 3 मुहूर्त मध्याह्न, 3 मुहूर्त अपराह्ण तथा 3 मुहूर्त सायाह्न कहलाते है।

दि 1 अप्रैल को नवमी तिथि की समाप्ति के काल की गणना यहाँ प्रासंगिक होगी। इस दिन दिनमान 12 घंटा 20 मिनट है। इस प्रकार एक मुहूर्त का मान 50 मिनट लगभग है। (1 मुहूर्त = दिनमान /15)

सूर्योदय 5:54 में हो रहा है। सूर्योदय से 6 मुहूर्त बीतने के बाद मध्याह्न-काल 10:54 से प्रारम्भ हो रहा है, जबकि पंचांगों में नवमी तिथि का अधिकतम मान 9:15 बजे तक है। इस प्रकार मध्याह्न-काल आरम्भ होने के पूर्व ही नवमी तिथि बीत जाती है। अतः मध्याह्न-व्यापिनी होने के कारण रामनवमी व्रत पूर्व दिन 31 मार्च को ही होना चाहिए।

शास्त्रीय निर्णय के अनुसार यह ध्यान देने योग्य है कि नवमी तिथि के मान के अनुसार कुल तीन स्थितियाँ हो सकती है –

1. जब एक ही दिन मध्याह्न काल में नवमी हो।
2. जब दोनों दिन मध्याह्न काल में नवमी हो।
3. जब किसी दिन भी मध्याह्न में नवमी न हो।

पहली स्थिति में सभी शास्त्रकार एकमत हैं कि रामनवमी उसी दिन होगी, जिस दिन मध्याह्न काल में नवमी तिथि है। दूसरी और तीसरी स्थिति में यह निर्णय लिया गया है कि अष्टमीविद्धा नवमी त्याज्य है। ऊपर दी गयी गणना से स्पष्ट है कि इस वर्ष पहली स्थिति है। अतः अष्टमीविद्धा का त्याग करने की परिस्थिति ही नहीं है।

रामनवमी पर्व के निर्णय में दशमी के मान के अनुसार एक और स्थिति उत्पन्न होती है, जब दशमी तिथि का क्षय हो। ऐसी स्थिति में एकादशी का व्रत करनेवालों के लिए रामनवमी-व्रत की पारणा का लोप हो जाता है। इस परिस्थिति में भी अष्टमीविद्धा नवमी के दिन व्रत करने की बात कही गयी है। यह स्थिति इस वर्ष लागू नहीं हो रही है।

चर्चा के क्रम में कुछ महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर विचार हुए, जो इस प्रकार हैं –

(क) चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के अवतार-ग्रहण के उपलक्ष्य में रामनवमी व्रत की परम्परा प्राचीन काल से रही है। वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के 18वें सर्ग के अनुसार चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र और कर्क लग्न में कौशल्या के गर्भ से श्रीराम का जन्म हुआ।

ततश्च द्वादशे मासे चैत्रे नावमिके तिथौ। ।4। ।
नक्षत्रेऽदितिदैवत्ये स्वोच्चसंस्थेषु पञ्चसु।
ग्रहेषु कर्कटे लग्ने वाक्पताविन्दुना सह। ।5। ।
प्रोद्यमाने जगन्नाथं सर्वलोकनमस्कृतम्।
कौशल्याजनयद् रामं दिव्यलक्षणसंयुतम्। ।6। ।

अर्थात् यज्ञ पूरा हो चुकने पर जब छह ऋतुएँ (वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, शिशिर, हेमन्त) बीत गईं तब बारहवें महीने में चैत्रशुक्ल पक्ष की नवमी को पुनर्वसु नक्षत्र और कर्क लग्न में कौशल्या के गर्भ से सारे अच्छे ही अच्छे लक्षणों वाले श्रीराम का जन्म हुआ। उस समय पाँच ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, गुरु और शुक्र) अपने अपने उच्च स्थानों पर थे और लग्न में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति थे (गुरु-चान्द्री योग था)। ।4-6। ।

(ख) भारत-रत्न पाण्डुरंग वामन काणे ने 'धर्मशास्त्र का इतिहास' नामक कालजयी ग्रन्थ में रामनवमी की तिथि के निर्धारण में धर्मशास्त्रीय-ग्रन्थों के आधार पर यह निर्णय दिया है कि यदि नवमी तिथि दो दिन हो, तो जिस दिन मध्याह्न में नवमी तिथि हो उस दिन रामनवमी मनायी जानी चाहिए।

(ग) रामनवमी व्रत के निर्णय में लग्न नक्षत्र एवं तिथि तीनों का समावेश किया जाता है। इस व्रत के सम्बन्ध में निर्णय देते हुए माधवाचार्य (14वीं शती) ने अपने ग्रन्थ 'कालमाधव' में लिखा है –

चैत्रशुक्ला तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि।
सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत्।

इस प्रकार माधवाचार्य ने इसे मध्याह्न-व्यापिनी माना है, अर्थात् जिस दिन दोपहर में नवमी तिथि होगी, उस दिन रामनवमी व्रत होगा। उन्होंने रामनवमी पर्व के सम्बन्ध में विचार कर अन्त में सिद्धान्त रूप में अपना मत इस प्रकार प्रकट किया है – **सर्ववाक्यपर्यालोचनया नक्षत्ररहितापि मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्येति सिद्धम्।** (कालमाधव : सं0 डा0 ब्रजकिशोर साई, प्रकाशक – चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी प्रथम संस्करण पृ0 285)

(घ) कमलाकर भट्ट कृत प्रसिद्ध धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ 'निर्णय-सिन्धु' के अनुसार भी यह तिथि मध्याह्न-व्यापिनी है। इस ग्रन्ध के अनुसार पूर्व दिन में ही मध्याह्न के समय नवमी तिथि रहने पर उसी दिन व्रत होना चाहिए – **पूर्वेद्युरेव मध्याह्नयोगे कर्मकालव्याप्तेः सैव ग्राह्या।** इस निर्णय के पक्ष में ग्रन्थकार ने अगस्त्य-संहिता के वचन को उद्धृत किया है, जिसके अनुसार श्रीराम का जन्म पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्क लग्न में हुआ था। यहाँ यह ध्यातव्य है कि चैत्र मास में मीन लग्न के अन्तिम चरण में या मेष के प्रथम चरण में सूर्योदय होता है। इसलिए कर्क लग्न निश्चित रूप से मध्याह्न के समय होगा। अतः शास्त्रकारों ने इसे मध्याह्न-व्यापिनी माना है। नवमी तिथि की एक अन्य परिस्थिति का भी उन्होंने उल्लेख किया है कि यदि दशमी तिथि का क्षय अथवा वृद्धि नहीं हो तो मध्याह्नव्यापिनी होने के कारण वैष्णवों द्वारा भी अष्टमीविद्धा ही करनी चाहिए – **दशमीवृद्धयभावेऽष्टमीविद्धाया एव मध्याह्नव्यापित्वे क्षये च वैष्णवैरपि विद्धैवोपोष्येत्यर्थः।**

(ङ) धर्मशास्त्र की परम्परा में महामहोपाध्याय महेश ठाकुर का नाम आदर के साथ लिया जाता है। वे मिथिला के राजा भी हुए थे। उन्होंने 'तिथितत्त्वचिन्तामणि' नामक ग्रन्थ में प्रथमतः लिखा है – **चैत्रशुक्ल नवमी रामनवमी, सा च मध्याह्नयोगिनी ग्राह्या।** इसके प्रमाण में उन्होंने अगस्त्यसंहिता को उद्धृत करते हुए लिखा है कि –

चैत्रशुक्ले तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि।
सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत्।
इत्यगस्त्यसंहितोक्तेश्च इति मत्कृतस्मृतिरत्नाकरे।

यदि दोनों दिन मध्याह्न काल में नवमी हो उस स्थिति में अथवा किसी दिन भी मध्याह्न में नवमी नहीं हो उसी स्थिति में अष्टमीविद्धा नवमी का त्याग होगा अन्यथा यह तिथि मध्याह्न-व्यापिनी है, जिस दिन मध्याह्न में नवमी तिथि होगी, उसी दिन व्रत होगा।

(च) रत्नपाणि मिथिला के एक श्रेष्ठ निवन्धकार हैं। इन्होने खण्डबलाकुल के राजा छत्रसिंह की आज्ञा से दरभंगा में कृत्यसागर नामक धर्मशास्त्रीय निवन्ध लिखा था। इन्होंने भी कृत्यरत्नाकर में स्पष्ट कहा है कि यह मध्याह्न-व्यापिनी तिथि है और पुनर्वसु नक्षत्र का योग अत्यन्त प्रशस्त माना गया है – **तथा च दिनद्वये नवमीव्याप्तौ मध्याह्नव्याप्तपुनर्वस्वृक्षसंयुक्तैव नवम्युपोष्येति सिद्धम्। अथ तादृश्यष्टमीयुक्ताप्युपोष्या स्यादिति तु नाशङ्क्यम्।** (कृत्यरत्नाकर : पृ0 104, मिथिला शोध संस्थान, दरभंगा 1977 ई0)

(छ) पण्डित रामचन्द्र झा मिथिला के प्रसिद्ध वर्षकृत्यकार हैं। इन्होंने भी वर्षकृत्य के प्रथम भाग में रामनवमी-पूजा के प्रसंग में टिप्पणी के रूप में धर्मशास्त्रीय निर्णय किया है कि यह मध्याह्नव्यापिनी है – **इयं नवमी मध्याह्नव्यापिनी ग्राह्या। तथा हि अगस्त्यसंहितायां – चैत्रशुक्ला तु नवमी पुनर्वसुयुता यदि। सैव मध्याह्नयोगेन महापुण्यतमा भवेत्। (अभावे केवलापि सदोपोष्या नवमीशब्दसंग्रहात्)। दिनद्वये मध्याह्नव्यापिनी चेत् पूर्वदिने पुनर्वसुनक्षत्रयुक्तामपि त्यक्त्वा परैव कार्या। तथा हि तत्रैव – नवमी चाष्टमीविद्धा त्याज्या विष्णुपरायणैः। उपोषणं नवम्यां च दशम्यां चैव पारणम्। पुनश्च तत्रैव – दशम्यादिषु वृद्धिश्चेत् विद्धा त्याज्यैव वैष्णवैः। तदन्येषां च सर्वेषां व्रतं तत्रैव निश्चितम्।**